आचार्य हरिषेण

जीवन-परिचय : हरिषेण नाम के अनेक विद्वान हुए हैं। उनसे प्रस्तुत हरिषेण भिन्न हैं। ये हरिषेण पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इन्होंने हरिवंश पुराण की रचना से 148 वर्ष बाद उसी वर्द्धमानपुर (हरिवंश पुराण की रचना का स्थान) में कथाकोश ग्रन्थ की रचना की थी।

ग्रन्थ प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है—मौनिभट्टारक हरिषेण, भरतसेन और हरिषेण। हरिषेण ने अपने गुरु भरतसेन को छन्द, अलंकार, काव्य, नाटक आदि शास्त्रों का ज्ञाता, काव्य का रचयिता, वैयाकरण, तर्कनिपुण और तत्त्वार्थवेदी बतलाया है। हरिषेण पुन्नाट संघ के आचार्य हैं और इसी पुन्नाट संघ में हरिवंश पुराण के कर्त्ता जिनसेन प्रथम भी हुए हैं।

आचार्य हरिषेण का समय ई. सन् की 10 वीं शताब्दी का मध्यभाग सिद्ध होता है। क्योंकि इनके द्वारा रचित कथाकोश ग्रन्थ शक संवत् 853, विक्रम संवत् 988 (ई. सन् 931) में रचा गया है।

रचना-परिचय : आचार्य हरिषेण के द्वारा लिखित एक ही ग्रन्थ है।

1. **कथाकोश :** आचार्य हरिषेण ने पद्यबद्ध वृहत् कथाकोश ग्रन्थ लिखा है। इस कथाकोश ग्रन्थ में छोटी-बड़ी सब मिलाकर 157 कथाएँ हैं और ग्रन्थ का प्रमाण अनुष्टुप छन्द में 12500 श्लोक हैं। इन कथाओं में ऐतिहासिक व्यक्तियों के सम्बन्ध में आराधना या व्यक्तित्त्व निर्माण सम्बन्धी किसी आख्यान को प्रकट किया है।